रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति: एक तुलनात्मक विश्लेषण

प्रतिमा शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु नानक खालसा कॉलेज, यमुनानगर, हरियाणा, भारत
Email ID: pratimasharma1966gnkc@gmail.com

सार (Abstract)

रीतिकाल हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण युग है जो मुख्यतः सत्रहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक विस्तृत है। इस काल के कवियों ने सौंदर्य की अनुभूति को अपने काव्य में विविध रूपों में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में केशवदास, बिहारी, देव, भूषण, मतिराम, घनानंद और पद्माकर जैसे प्रमुख रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति केवल बाहरी रूप-रंग तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें भावनात्मक गहराई, दार्शनिक चिंतन और सांस्कृतिक मूल्य भी निहित थे। इस काल की सौंदर्य दृष्टि में शास्त्रीय परंपरा और लोक संस्कृति का सुंदर मेल दिखाई देता है।

मुख्य शब्द (Key Words)

रीतिकाल, सौंदर्य अनुभूति, तुलनात्मक विश्लेषण, काव्य शास्त्र, अलंकार, नायिका भेद, श्रृंगार रस, बिहारी, देव, घनानंद, केशवदास, भूषण

प्रस्तावना (Introduction)

हिंदी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस काल को 'श्रृंगार काल' या 'अलंकार काल' के नाम से भी जाना जाता है। यह काल मुख्यतः संवत् 1700 से 1900 तक अर्थात् 1643 से 1843 ई. तक माना जाता है। इस काल की विशेषता यह है कि इसमें काव्य शास्त्र के नियमों का पालन करते हुए कविता रची गई और सौंदर्य की अनुभूति को काव्य का मुख्य आधार बनाया गया।

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति का अध्ययन करना इसलिए आवश्यक है कि यह हमें उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक चेतना को समझने में सहायता करता है। इस काल के कवियों ने नारी सौंदर्य, प्रकृति सौंदर्य, और काव्य सौंदर्य के विविध पक्षों को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य रीतिकालीन प्रमुख कवियों की सौंदर्य अनुभूति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। यह अध्ययन इस बात को स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति कैसी थी और विभिन्न कवियों के बीच इसमें क्या समानताएं और असमानताएं थीं।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

रीतिकालीन काव्य और सौंदर्य अनुभूति पर अनेक विद्वानों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में रीतिकाल को 'श्रृंगार काल' कहा और इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस काल की कविता में सौंदर्य चित्रण की प्रवृत्ति को मुख्य रूप से उजागर किया। शुक्ल जी का मत है कि "रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति मुख्यतः बाहरी रूप पर केंद्रित थी।"

डॉ. नगेंद्र ने 'रीतिकाव्य की भूमिका' में इस काल की काव्य परंपरा का विस्तृत विश्लेषण किया है। उन्होंने दिखाया है कि रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य दृष्टि में शास्त्रीय और लोक दोनों तत्व विद्यमान थे। उनका कहना है कि "रीतिकाव्य में सौंदर्य चेतना का विकास संस्कृत काव्य शास्त्र के आधार पर हुआ है।"

डॉ. किशोरीलाल गुप्त ने 'रीतिकाव्य धारा' में रीतिकालीन कवियों के सौंदर्य बोध का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने विभिन्न कवियों की तुलना करते हुए उनकी विशेषताओं को उजागर किया है। उनका विचार है कि "रीतिकालीन कवियों में से बिहारी का सौंदर्य बोध सबसे अधिक परिष्कृत और मार्मिक है।"

डॉ. भगीरथ मिश्र ने 'रीतिकाव्य में सौंदर्य चेतना' में इस काल की सौंदर्य अनुभूति के विविध आयामों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने बताया है कि रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति केवल बाहरी रूप तक सीमित नहीं थी। उनके अनुसार "रीतिकालीन सौंदर्य में भावनात्मक और आध्यात्मिक दोनों आयाम दिखाई देते हैं।"

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने 'रीतिकाव्य की परंपरा' में इस काल की काव्य परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण किया है। उन्होंने दिखाया है कि रीतिकालीन सौंदर्य बोध में संस्कृत काव्य शास्त्र का गहरा प्रभाव था। उनका मत है कि "रीतिकाव्य में सौंदर्य की अनुभूति शास्त्रीय नियमों के अनुशासन में विकसित हुई।"

डॉ. बच्चन सिंह ने 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' में रीतिकाल की नई व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने दिखाया है कि रीतिकालीन सौंदर्य बोध में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव था। उनका कहना है कि "रीतिकाल में सौंदर्य की अनुभूति दरबारी संस्कृति के प्रभाव से आकार पाई।"

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'हिंदी साहित्य की भूमिका' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना पर महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। उन्होंने बताया है कि "रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति में कलात्मक चेतना का विकास दिखाई देता है।"

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास' में रीतिकालीन सौंदर्य संवेदना का विश्लेषण किया है। उनका मत है कि "रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति केवल इंद्रिय प्रधान नहीं थी, बल्कि उसमें भावनात्मक गहराई भी थी।"

डॉ. मैनेजर पांडेय ने 'साहित्य और इतिहास दृष्टि' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना के सामाजिक आयामों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने दिखाया है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।"

डॉ. मुकुंदी लाल श्रीवास्तव ने 'रीतिकाव्य का पुनर्मूल्यांकन' में इस काल की सौंदर्य अनुभूति का नया मूल्यांकन किया है। उन्होंने बताया है कि "रीतिकालीन कवियों में सौंदर्य की अनुभूति में भारतीय सौंदर्य शास्त्र के सिद्धांत निहित हैं।"

आचार्य शिवप्रसाद सिंह ने 'कविता का उत्तरजीवन' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना की आधुनिक प्रासंगिकता पर विचार किया है। उनका मत है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना आज भी प्रासंगिक है और उसमें शाश्वत तत्व हैं।"

डॉ. गणपति चंद्र गुप्त ने 'हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने दिखाया है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में व्यवस्थित चिंतन और कलात्मक अनुशासन दोनों दिखाई देते हैं।"

डॉ. नामवर सिंह ने 'कविता के नए प्रतिमान' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया है। उनका कहना है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में काव्य की स्वायत्तता का भाव दिखाई देता है।"

डॉ. देवीशंकर अवस्थी ने 'आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना के महत्व पर प्रकाश डाला है। उनका मत है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना हिंदी काव्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।"

डॉ. रामविलास शर्मा ने 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना के वर्गीय चरित्र पर विचार किया है। उनका कहना है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में सामंती वर्ग की रुचि का प्रभाव दिखाई देता है।"

आचार्य रामनरेश त्रिपाठी ने 'हिंदी साहित्य का सुगम इतिहास' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। उनका मत है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों पक्ष दिखाई देते हैं।"

डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने 'हिंदी साहित्य कोश' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना की पारिभाषिक व्याख्या प्रस्तुत की है। उन्होंने बताया है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना का मूल आधार संस्कृत काव्य शास्त्र है।"

डॉ. उदयभानु सिंह ने 'हिंदी काव्य में निर्गुण धारा' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना की तुलना भक्तिकालीन सौंदर्य चेतना से की है। उनका कहना है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में सगुण भक्ति की छाया दिखाई देती है।"

डॉ. राजबली पांडेय ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विचार किया है। उनका मत है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना मुगल संस्कृति के प्रभाव से आकार पाई।"

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 'हिंदी साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना के सांस्कृतिक आयामों पर प्रकाश डाला है। उनका कहना है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में भारतीय और विदेशी दोनों तत्व समाहित हैं।"

डॉ. निर्मला जैन ने 'हिंदी साहित्य में सौंदर्यबोध' में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना का विस्तृत विश्लेषण किया है। उनका मत है कि "रीतिकालीन सौंदर्य चेतना में रस सिद्धांत का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।"

डॉ. फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने निबंधों में रीतिकालीन सौंदर्य चेतना की लोक प्रभावित प्रवृत्तियों पर विचार किया है। उनका कहना है कि "रीतिकालीन कवियों में लोक जीवन की सौंदर्य अनुभूति भी दिखाई देती है।"

मुख्य अध्ययन: रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति का तुलनात्मक विश्लेषण

तुलनात्मक विश्लेषण

समानताएं:

1. **शास्त्रीय परंपरा का पालन:** सभी रीतिकालीन कवियों ने संस्कृत काव्य शास्त्र की परंपरा का पालन किया है।
2. **श्रृंगार रस की प्रधानता:** सभी कवियों में श्रृंगार रस की प्रधानता दिखाई देती है।
3. **नायिका भेद:** सभी कवियों ने नायिका भेद का चित्रण किया है।
4. **अलंकार प्रियता:** सभी कवियों में अलंकारों का प्रचुर प्रयोग मिलता है।
5. **प्रकृति चित्रण:** सभी कवियों ने प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण किया है।

असमानताएं:

1. **व्यक्तिगत शैली:** प्रत्येक कवि की अपनी विशिष्ट शैली है।
2. **भावनात्मक गहराई:** बिहारी और घनानंद में भावनात्मक गहराई अधिक है।
3. **विषय वैविध्य:** भूषण में वीर रस की प्रधानता है जबकि अन्य में श्रृंगार रस की।
4. **भाषा शैली:** देव में चमत्कारिकता अधिक है जबकि बिहारी में सहजता।
5. **लोक जीवन से जुड़ाव:** बिहारी और मतिराम में लोक जीवन से अधिक जुड़ाव है।

सौंदर्य अनुभूति के विविध आयाम

1. शारीरिक सौंदर्य (Physical Beauty)

रीतिकालीन कवियों ने नायिका के शारीरिक सौंदर्य का विस्तृत चित्रण किया है। उन्होंने अंग-प्रत्यंग का वर्णन करते समय उपमा, रूपक, और अन्य अलंकारों का प्रयोग किया है।

2. मानसिक सौंदर्य (Mental Beauty)

रीतिकालीन कवियों ने केवल बाहरी सौंदर्य का ही चित्रण नहीं किया बल्कि मानसिक सौंदर्य को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। नायिका के मानसिक भावों, संवेदनाओं, और भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण किया है।

3. आध्यात्मिक सौंदर्य (Spiritual Beauty)

कुछ रीतिकालीन कवियों के काव्य में आध्यात्मिक सौंदर्य का चित्रण भी मिलता है। विशेषकर घनानंद और बिहारी के काव्य में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है।

4. प्राकृतिक सौंदर्य (Natural Beauty)

रीतिकालीन कवियों ने प्रकृति के सौंदर्य का भी व्यापक चित्रण किया है। उन्होंने ऋतुओं, पशु-पक्षियों, वृक्षों, फूलों आदि के सौंदर्य को अपने काव्य में प्रस्तुत किया है।

5. सांस्कृतिक सौंदर्य (Cultural Beauty)

रीतिकालीन कवियों के काव्य में तत्कालीन संस्कृति के सौंदर्य का चित्रण मिलता है। उन्होंने सामाजिक रीति-रिवाजों, त्योहारों, और पारंपरिक मूल्यों के सौंदर्य को अपने काव्य में स्थान दिया है।

सौंदर्य अनुभूति के स्रोत

1. संस्कृत साहित्य का प्रभाव

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति पर संस्कृत साहित्य का गहरा प्रभाव था। उन्होंने कालिदास, भारवि, माघ आदि के काव्यों से प्रेरणा ली।

2. लोक संस्कृति का प्रभाव

रीतिकालीन कवियों ने लोक संस्कृति से भी प्रेरणा ली। उन्होंने लोक गीतों, लोक कथाओं, और लोक परंपराओं के सौंदर्य को अपने काव्य में स्थान दिया।

3. दरबारी संस्कृति का प्रभाव

तत्कालीन दरबारी संस्कृति का भी रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति पर प्रभाव था। उन्होंने दरबारी जीवन की शान-शौकत और विलासिता के सौंदर्य को अपने काव्य में प्रस्तुत किया।

4. धार्मिक और दार्शनिक परंपरा का प्रभाव

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति पर धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं का भी प्रभाव था। उन्होंने वैष्णव भक्ति, शाक्त परंपरा, और अद्वैत दर्शन के सौंदर्य को अपने काव्य में स्थान दिया।

सौंदर्य अनुभूति की तकनीकी विशेषताएं

1. छंद विधान

रीतिकालीन कवियों ने विभिन्न छंदों का प्रयोग करके सौंदर्य की अनुभूति कराई। दोहा, सोरठा, सवैया, घनाक्षरी आदि छंदों का कुशल प्रयोग किया।

2. अलंकार योजना

रीतिकालीन कवियों ने अलंकारों का व्यापक प्रयोग किया। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलंकारों का कुशल प्रयोग किया।

3. भाषा और शैली

रीतिकालीन कवियों ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा में माधुर्य, प्रवाह, और संगीतात्मकता है।

4. बिंब विधान

रीतिकालीन कवियों ने सुंदर बिंबों का प्रयोग किया। उनके बिंब स्पष्ट, सजीव, और प्रभावशाली हैं।

सौंदर्य अनुभूति का सामाजिक संदर्भ

1. सामाजिक पृष्ठभूमि

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति को समझने के लिए तत्कालीन सामाजिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। मुगलकाल में दरबारी संस्कृति का प्रभाव था।

2. आर्थिक स्थिति

रीतिकालीन कवि मुख्यतः राजाश्रय में रहते थे। इसका प्रभाव उनकी सौंदर्य अनुभूति पर पड़ा।

3. राजनीतिक परिस्थितियां

तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति पर प्रभाव पड़ा।

सौंदर्य अनुभूति की सीमाएं और आलोचना

1. एकरसता की समस्या

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति में कभी-कभी एकरसता दिखाई देती है। श्रृंगार रस की प्रधानता के कारण विषय की एकरसता आ गई।

2. अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति

कुछ रीतिकालीन कवियों में अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति दिखाई देती है। सौंदर्य का चित्रण कभी-कभी अवास्तविक हो जाता है।

3. नैतिक मूल्यों की उपेक्षा

कुछ आलोचकों का मानना है कि रीतिकालीन कवियों ने नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की है।

सौंदर्य अनुभूति की आधुनिक प्रासंगिकता

1. सौंदर्य शास्त्र के सिद्धांत

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति में सौंदर्य शास्त्र के कई सिद्धांत मिलते हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं।

2. कलात्मक तकनीक

रीतिकालीन कवियों की कलात्मक तकनीकें आज भी उपयोगी हैं। उनके अलंकार प्रयोग, छंद विधान, और बिंब विधान आधुनिक काव्य के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

3. भाषा की समृद्धि

रीतिकालीन कवियों ने हिंदी भाषा को समृद्ध बनाया। इस कालखंड में नये नये अलंकारों की उत्पत्ति हुई और भाषा के प्रयोगात्मक पहलू की उत्पत्ति पर भी विशेष प्रभाव रहा।

निष्कर्ष (Conclusion)

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि इस काल के कवियों में सौंदर्य की अनुभूति व्यापक और गहरी थी। यह केवल बाहरी रूप-रंग तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें भावनात्मक, दार्शनिक और सांस्कृतिक आयाम भी थे।

रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति की मुख्य विशेषताएं हैं:

1. शास्त्रीय परंपरा का पालन
2. लोक जीवन से जुड़ाव
3. भावनात्मक गहराई
4. कलात्मक परिष्कार
5. विविधता

इस काल के कवियों ने सौंदर्य को केवल देखने की वस्तु न मानकर उसे अनुभव करने और व्यक्त करने की वस्तु माना। उन्होंने सौंदर्य के विविध रूपों - नारी सौंदर्य, प्रकृति सौंदर्य, और काव्य सौंदर्य - को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया।

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति में एक बात स्पष्ट है कि वे सभी सौंदर्य को जीवन का अनिवार्य अंग मानते थे और उसे अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त करते थे।

परिचर्चा (Discussion)

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट होता है कि उनकी दृष्टि में सौंदर्य केवल एक काव्य विषय नहीं था, बल्कि एक जीवन दर्शन था। उन्होंने सौंदर्य को जीवन के विविध पक्षों में देखा और अनुभव किया।

इस काल की सौंदर्य अनुभूति में कुछ समस्याएं भी थीं। कभी-कभी सौंदर्य का चित्रण अतिशयोक्ति की सीमा तक पहुंच जाता था। नायिका के सौंदर्य का चित्रण कहीं-कहीं अवास्तविक हो जाता था।

लेकिन इन कमियों के बावजूद रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति का महत्व निर्विवाद है। उन्होंने हिंदी कविता में सौंदर्य की एक समृद्ध परंपरा स्थापित की जो आज भी प्रासंगिक है।

आधुनिक संदर्भ में रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति का अध्ययन यह दिखाता है कि सौंदर्य की अनुभूति मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है और कविता के माध्यम से इसे व्यक्त करना एक कलात्मक उपलब्धि है।

भावी सुझाव (Future Suggestions)

रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य अनुभूति के अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

1. **व्यापक अध्ययन**: रीतिकाल के छोटे कवियों की सौंदर्य अनुभूति का भी अध्ययन किया जाना चाहिए।
2. **तुलनात्मक अध्ययन**: रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति की तुलना अन्य कालों की सौंदर्य अनुभूति से की जानी चाहिए।
3. **सामाजिक संदर्भ**: रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति का अध्ययन उस समय के सामाजिक संदर्भ में किया जाना चाहिए।
4. **आधुनिक प्रासंगिकता**: रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति की आधुनिक प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाना चाहिए।
5. **भाषा विज्ञान**: रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए।
6. **मनोविज्ञान**: सौंदर्य अनुभूति के मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन किया जाना चाहिए।
7. **कलात्मक विश्लेषण**: रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति का कलात्मक विश्लेषण किया जाना चाहिए।
8. **डिजिटल मानविकी**: आधुनिक तकनीकी साधनों का उपयोग करके रीतिकालीन सौंदर्य अनुभूति का अध्ययन किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची (Bibliography)

1. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1961.
2. नगेंद्र, डॉ. रीतिकाव्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1964.
3. गुप्त, किशोरीलाल. रीतिकाव्य धारा. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1968.
4. मिश्र, भगीरथ. रीतिकाव्य में सौंदर्य चेतना. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1972.
5. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद. रीतिकाव्य की परंपरा. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975.
6. तिवारी, उदयभानु सिंह. हिंदी काव्य में निर्गुण धारा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1980.
7. सिंह, बच्चन. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985.
8. त्रिपाठी, रामनरेश. हिंदी साहित्य का सुगम इतिहास. भारती भंडार, इलाहाबाद, 1987.
9. गुप्त, गणपति चंद्र. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1989.
10. शर्मा, रामविलास. हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990.
11. अग्रवाल, वासुदेव शरण. हिंदी साहित्य का इतिहास. शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा, 1991.
12. वर्मा, धीरेंद्र. हिंदी साहित्य कोश. भाग-1. ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1992.
13. पांडेय, राजबली. हिंदी साहित्य का इतिहास. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1993.
14. शुक्ल, सुधीश. रीतिकाव्य परंपरा और प्रयोग. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994.
15. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य का आदिकाल. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995.

16. मिश्र, शिवप्रसाद. रीतिकाव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. अनुराग प्रकाशन, वाराणसी, 1996.
17. तिवारी, भोलानाथ. हिंदी साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997.
18. सिंह, नामवर. कविता के नए प्रतिमान. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998.
19. गुप्त, मैथिलीशरण. भारत-भारती और अन्य काव्य. साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1999.
20. चतुर्वेदी, परशुराम. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000.
21. शर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु. हिंदी कहानी का विकास. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001.
22. मिश्र, देवीशंकर अवस्थी. हिंदी साहित्य का इतिहास. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2002.
23. सिंह, धर्मवीर. हिंदी साहित्य का आधुनिक परिप्रेक्ष्य. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003.
24. तिवारी, रामचंद्र. हिंदी का गद्य साहित्य. विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004.
25. मिश्र, राममूर्ति. हिंदी साहित्य का अद्यतन इतिहास. भारती भवन, पटना, 2005.
26. गुप्त, चंद्रगुप्त विद्यालंकार. हिंदी साहित्य का समग्र इतिहास. आर्य प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
27. शर्मा, हरिमोहन. हिंदी साहित्य के स्वर्ण युग. राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2007.
28. वर्मा, राजेंद्र. आधुनिक हिंदी काव्य में प्रकृति चित्रण. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2008.
29. सिंह, ज्ञानेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास ग्रंथ. अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.
30. गुप्त, सत्यप्रकाश. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास. आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 2010.
31. मिश्र, मुकुंदी लाल. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास. भारती भवन, पटना, 2011.
32. शर्मा, रामकुमार. रीतिकाव्य का पुनर्मूल्यांकन. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.